Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-10, Continuous Issue-16, November - December 2022

वैदिक साहित्ये मानवजीवनोपदेश 'बुद्धिप्रदीप' के सन्दर्भ में

प्रस्तावना :-

वैदिक साहित्य मानव संस्कृति का आदिस्रोत है | मानव सभ्यता के विकास के अति प्राचीन काल से ही वेद कि शिक्षाएँ मानव मात्र को सत् एवं असत् कि ओर प्रेरित करती है | मानव जीवन के दो पहलू है वैयक्तिक एवं सामाजिक | समाज का अभ्युदय एवं सुख-शान्ति तब तक संभव नहीं है जब तक दोनो पहलुओं में पूर्ण सामञ्जस्य न हो | वर्णव्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, चार पुरुषार्थ, ऐहिकता और पारलौकिकता, भौतिकता और आध्यात्मिकता, आर्य और अनार्य विषयक तत्त्वों का अद्यावधि मूल वैदिक साहित्य है | विश्व का कोई साहित्य ऐसा नहीं जिस पर वैदिक साहित्य का प्रभाव न हो |

स्वामिनारायण संप्रदाय के भगवान स्वामिनारायण समकालीन संत शुकानंदमुनि रचित 'बुद्धिप्रदीप' ग्रंथ में सत् एवं असत् कर्मों का विवेचन करके मानवजीवनोपदेश का प्रतिपादन किया गया है | देशकालादि परिस्थितियों में मनुष्य को कैसे जीवनयापन करके स्व-श्रेय एवं स्व-प्रेय की कामना करनी है उसका विशद वर्णन किया गया है |

वस्तुतस्तु 'बुद्धिप्रदीप' ग्रंथ में वर्णित मानवजीवनोपदेश से तात्पर्य है की, विद्यमान परिस्थितियों में आपकी प्रतिक्रिया किन मूल्यों पर आधारित होगी?, कैसी होगी?, कैसे आप उसे स्वीकार करतें हैं अथवा प्रतिकार कर सकतें है ?, आप अपनेको कैसे तैयार करतें हैं ? 'बुद्धिप्रदीप' ग्रंथ में वर्णित मानवजीवनोपदेश का यहाँ विवेचन किया जाएगा |

मानवजीवनोपदेश :-

संप्रति वैदिक साहित्ये मानवजीवनोपदेश अन्तर्गत नैतिकजीवनोपदेश, धार्मिक जीवनोपदेश, सामाजिक जीवनोपदेश व राजनैतिक जीवनोपदेश का 'बुद्धिप्रदीप' के संदर्भ में विवेचन किया जाएगा |

नैतिक जीवनोपदेश -

वैदिक साहित्य में उत्तम नैतिक जीवनोपदेश अति श्लाघनीय है | आचार शिक्षा कि दृष्टि से, नैतिक दर्शन के रूप में व कर्तव्यबोधन के रूप में मनुष्यों को हेय एवं उपादेय कर्मों का प्रामाणिक

उपदेश प्राप्य है | सत्य, दान, दया व आत्मसंयम जैसे उच्च नैतिक आदर्शों को मनुष्यों को धारण करना चाहिए | तैत्तिरीयोपनिषद में कहा गाय है कि -

"सत्यान्न प्रमदितव्यम् | धर्मान्न प्रमदितव्यम् | कुशलान्न प्रमदितव्यम् | भूत्यै न प्रमदितव्यम् | देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् |"[1]

'बुद्धिप्रदीप' में भी नैतिक उपदेश का प्रतिपादन करते हुए शुकानन्दमुनि कहते है कि -

"हिंसाविरहिता यज्ञा दानानि च व्रतानि च |

सत्तीर्थयात्रा चेत्याद्या: क्रियाः सत्यः प्रकीर्तिताः ||"[2]

हिंसारहित यज्ञ करना, दान करना, शास्त्रोक्त व्रत करना, सत्तीर्थ कि यात्रा करना यह सब सत् क्रिया है, अर्थात् मनुष्यों को आत्मोन्नति कि ओर ले जानेवाले उच्च आदर्श है उनका अनुसरण करना चाहिए |

ऋग्वेद में अक्षसूक्त उत्तम नैतिक उपदेश देनेवाला है | धन कि लालच में विवेकबुद्धि भ्रष्ट हो जाने पर व्यक्ति कि स्थिति अत्यन्त दयनीय हो जाती है | वह स्वयं के साथ साथ अपने पुरे परिवार को भी नष्ट कर देता है |ऐसे समय भगवान सविता उपदेश देते हुए कहते है कि -

"अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहुमन्यमानः |

तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः ||"[3]

हे कितव तुम जुआ मत खेलो, खेती करो और उससे प्राप्त धन से सुख प्राप्त करो, यह तुम्हारी गाय है, यह तुम्हारी पत्नी है, अतः तुम जुआ खेलना छोड़ दो |

यही बात 'बुद्धिप्रदीप' में भी कही गई है -

"द्युतं दुरुक्तिर्न्यान्यं, सङ्गः क्रीडा च नर्म च |

परस्त्रीणामेवमाद्या, असत्य उहिताः क्रियाः ||"[4]

जुआ खेलना, कटु वचनों का कहना, परस्त्री से सङ्ग, क्रीडा और हास्य विनोद करना इत्यादि असत् क्रिया है अर्थात् मनुष्यों के लिए ये सब करना प्रतिषिद्ध है | इस तरह से वैदिक साहित्य में जो नैतिक उपदेश दिया गया है उसका प्रभाव बुद्धिप्रदीप में भी स्पष्ट देखा जा सकता है |

धार्मिक जीवनोपदेश :-

धर्म में ही समस्त जगत प्रतिष्ठ है | श्रुति-स्मृति द्वारा जो कर्म समाज के लिए विहित है वे धर्म हैं | वैदिक काल में धर्म के दो स्वरूप दृष्टि गोचर होते है, एक भक्ति एवं दूसरा यज्ञ | मनुष्य अपनी अपेक्षा एवं आकांक्षाओं को परिपूर्ण करने हेतु वैदिक साहित्य मे उपदिष्ट यज्ञ का अनुष्ठान करता था अपितु मोक्ष प्राप्ति भी एक लक्ष्य हुआ करता था |

अपने अपने वर्णाश्रमधर्म में रहकर उद्यमवृत्ति का निर्वहन करने का उपदेश ऋग्वेद के पुरुषसूक्त मे मिलता है | धर्म मात्र कर्मकाण्ड नहीं है अपितु आचार-विचार, श्रुति-स्मृतियों में निर्दिष्ट नियमादि, सत्पुरुषों के आचरण का निचोड है | मनुस्मृति में कह गया है कि -

"वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः |

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ||"[5]

वेद, स्मृति, सदाचार और आत्मप्रसन्नता यह चार धर्म के लक्षण है | 'बुद्धिप्रदीप' में धर्म कि उपादेयता बताते हुए शुकानन्दमुनि कहते है की-

"हरेरेकान्तिकीं भक्तिं, जनानां कुर्वतां भुवि |

तस्यां महान्सहायोऽस्ति, धर्मः स्वान्वयसंयुत ||"[6]

इस संसार में भगवद्भक्ति करते भगवान के भक्त को वंश सहित जो धर्म है वह अतीव सहायक बनता है | यहाँ पर 'वंश' पद का तात्पर्य है वेदोक्त परम्परा से प्राप्त धर्म अर्थात् विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त की परंपरा से प्राप्त धर्म |

"स धर्मः सान्वयोः नूनं देशादौ सति वर्तते |

अधर्मोऽस्ति देशादौ स आस्ते सान्वय: सदा ||"[7]

धर्म एवम् अधर्म के लक्षण बताते हुए कहा गया है कि जिस देश में शास्त्रोक्त धर्म का पालन करने वाले मनुष्यों का निवास हो वहाँ रहना चाहिए और उसके विपरीत अधर्म के बाहुल्य वाले देश का विवेकी पुरुषों को तत्काल त्याग कर देना चाहिए भले ही वह वंश परम्परा का देश क्यों न हो |

सामाजिक जीवनोपदेश :-

वैदिक साहित्य सामाजिक जीवनोपदेश से भरा पडा है | महर्षि पाणिनि ने 'समुदोरजः पशुषु' सूत्र के द्वारा 'समाज=मानव समूह' और समज=पशु-समूह' शब्द निष्पादित कर मानव कि सामाजिकता प्रतिपादित कि है | सामाजिक व्यस्था कि महत्ता दर्शाते हुए सांगठनिक कार्य का उपदेश देते हुए ऋग्वेद में कहा गया है कि -

"सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् |

देवा भागं यथा पूर्वे सं जानानामुपासते ||"[8]

समाज में पारिवारिक जीवन कैसे जिया जाता है उसका सुन्दर मन्त्र अथर्ववेद में है -

"अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः |

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ||"[9]

गृहस्थ का सामान्य जीवन कैसे सर्वथा सुखी बनें एतदर्थ उपदेश दिया गया है | 'बुद्धिप्रदीप' में भी शुकानन्दमुनि कहते है कि -

"ज्ञानं वैराग्यमभयं सत्यं च तप आर्जवम् |

शौचं क्षेमं सुखं धैर्यं स्थैर्यं च मृदुता तथा ||"[10]

ज्ञान, वैराग्य, अभय, सत्य, तप, आर्जव, पवित्रता, क्षेम, धैर्य, स्थैर्य, मृदुता इत्यादि धर्म को धारण करने वाला गृहस्थ सदैव निःतान्त सुख कि प्राप्ति करता है |

राजनैतिक जीवनोपदेश :-

राजनैतिक दृष्टि से भी वैदिक साहित्य में अतीव महत्वपूर्ण जीवनोपदेश प्राप्य है | ऋग्वेद में सभा एवं समिति का विशेष महत्व था | युद्ध, राज्य व्यवस्था, सैनिक एवं सेनापति के गुण, व्यूह रचना, शत्रु दमन, विभिन्न शासन प्रणालियों की संस्थाओ तथा सिद्धान्तों के वर्णनों में गर्भित उपदेश प्राप्त है | प्रजा का पालन करना ही राजा का मुख्य धर्म होता था |

"राष्ट्रमेव विश्याहन्ति तस्माद्राष्ट्रीविशं घातुकः विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति तस्माद्राष्ट्री विशमत्ति न पुष्टं मन्यत इति |"[11]

जो राजा प्रजा का पालन करने में अक्षम हो जाता है वह राष्ट्रघाताक साबित होता है अतः राजा को अपनी प्रजा के पालन में निरन्तर रत रहना चाहिए | 'बुद्धिप्रदीप' में भी कहा गया है कि -

"यत्र राजा तदीयाश्च परस्य स्त्रिर्धनानि च |

बलाद्धरेयुः पीडेयुर्दुर्बलान्सोऽप्यसन्मतः ||"[12]

जिस देश का राजा, दीवान, तथा परिचारक बलपूर्वक परस्त्री, परधन का हरण करके गरीब लोगों को प्रताडित करतें हैं वह देश असत् देश होता है उनका सर्वथा त्याग करना चाहिए |

वैदिक काल में जनतन्त्रशासनविधि थी तो 'बुद्धिप्रदीप' में निर्दिष्ट संप्रति जनतन्त्र का उदय आधुनिकरूप से लक्ष्यमान है | देशकालादि स्थिति के अनुसार राजतन्त्र कि गतिविधियों में बदलाव जरूर आये है किन्तु अद्यावधि प्रजा के हित के लिए राजा को सर्वथा कार्यरत रहना चाहिए ऐसा उपदेश केन्द्र में है |

उपसंहार :-

वैदिक साहित्य मे उपदिष्ट मानवजीवनोपदेश काल के अन्धकार को भेद के समग्र मानव समाज के लिए पथदर्शक है अपितु वैदिक साहित्य से प्रभावित 'बुद्धिप्रदीप' में उपदिष्ट मानवजीवनोपदेश वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुगमनीय है | शुकानन्दमुनि ने 'बुद्धिप्रदीप' में हेय एवम् उपादेय कर्मो का प्रतिपादन करके 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की वैदिक भावना को ही उजागर किया है | देशकालादि परिस्थितियों में मनुष्य को कैसे जीवनयापन करके स्व-श्रेय एवं स्व-प्रेय की कामना करनी है उसका विशद उपदेश वैदिक साहित्य मे मिलता है तो 'बुद्धिप्रदीप' में उन कर्मों का गत्यात्मक उपदेश मिलता है | अन्ततोगत्वा मनुष्य को मनुष्य बनाए ऐसा उपदेश वैदिक साहित्य गङ्गोत्री की अविरत धारा से भारतीय समाज सदा प्राप्त करें |

संदर्भग्रन्थ :-

(1) उपनिषद-विद्या, भाणदेव, प्रवीण प्रकाशन, राजकोट, 1998 पृ.-212

(2) शुकानन्दमुनि कृत ग्रन्थादि, श्रीस्वामिनारायण मन्दिर कुण्डलधाम तथा कारेलीबाग वडोदरा, 2014 पृ.-78, श्लोक-27

(3) ऋग्वेद दर्शन, भाणदेव, प्रवीण प्रकाशन, राजकोट, 2012 पृ.-221, मं.-१०/३४/१३

(4) शुकानन्दमुनि कृत ग्रन्थादि, श्रीस्वामिनारायण मन्दिर कुण्डलधाम तथा कारेलीबाग वडोदरा, 2014 पृ.-79, श्लोक-30

(5) मनुस्मृति, भा.क. शास्त्री गिरिजाशङ्कर मयाशङ्कर,सस्तुं साहित्य मुद्रणालय ट्रस्ट, अमदावाद, 1984 पृ.18, अ.२/१२

(6 तथा 7) शुकानन्दमुनि कृत ग्रन्थादि, श्रीस्वामिनारायण मन्दिर कुण्डलधाम तथा कारेलीबाग वडोदरा, 2014 पृ.-72-73, श्लोक-3-5

(8 तथा 9) संस्कृत धोरण-10, गुजरात शाला पाठ्य पुस्तक मण्डल, गान्धीनगर, 2017 पृ.-1,2 ऋग्वेद १०/१९१/२, अथर्व. ३/३०/२

(10) शुकानन्दमुनि कृत ग्रन्थादि, श्रीस्वामिनारायण मन्दिर कुण्डलधाम तथा कारेलीबाग वडोदरा, 2014 पृ.-94, श्लोक-90

(11) ब्रह्मचारी व्यासनन्दन, 'वैदिक साहित्यस्योपगिता', संस्कृत-मञ्जरी, वर्षम्-१६ अंक-२, ISSN-2278-8360, पृ.-7

(12) शुकानन्दमुनि कृत ग्रन्थादि, श्रीस्वामिनारायण मन्दिर कुण्डलधाम तथा कारेलीबाग वडोदरा, 2014 पृ.-74, श्लोक-12

अङ्कित दोलतलाल कुकडीया

शोधछात्र, संस्कृतविभाग

के.एस.के.वी.कच्छ विश्वविद्यालय

भुज-कच्छ |

संपर्क - 9106745754